भगवती प्रसाद द्विवेदी

दोल्हापाती

पहुंच बाग में सब साथी
खेलें हम दोल्हापाती ।

खेल गांव का,डगर विशेष
बस एक चोर, सिपाही शेष ।

यहां खेल में उल्टी डोर
सिपाहियों को पकड़े चोर ।

चढ़ें सिपाही पेड़ों पर
कूदें -फांदें इधर-उधर ।

चोर उन्हें छूना चाहे
फैलाकर अपनी बांहें ।

अगर सिपाही छू जाते
चोर तुरत वे हो जाते।

दौड़ पेड़ की डालों पर
बन जाते हम सब बंदर ।

अमराई की छांव तले
दोल्हापाती खेल चले ।

सुबह शहर की

भोंपू बजा कारखाने का
हाकर फेंक गया अखबार,
ग्वाला दूध लिए आ पहुंचा
'बाबूजी,अब खोलो द्वार !'

आई महरी,कई घरों में
उसको है बर्तन धोना,
चाय रखी नौकर ने खट-से
'साहब जी, छोड़ो सोना !'

आंखें मलते उठे महाशय
हाथों में लेकर अखबार,
चाय सुड़कते, खबरें पढ़ते
शुरू हुआ जीवन -व्यापार।

बूढ़े छड़ी टेककर टहलें
करते हैं वे 'मार्निंग वाक',
नौजवान सोये बिस्तर में
क्या निर्माण करेंगे, खाक!

कैसी होती हवा सुबह की
होता सूर्योदय कैसा,
लेट-लतीफ भला क्या जानें
चिड़ियों का कलरव वैसा !

सोएं काफी रात गए, फिर
जगें दिन चढ़े शहरी लोग,
इसीलिए तो घर कर जाते
उनमें तरह-तरह के रोग।

आती सुबह हवाओं के संग
लेकर सेहत की सौगात,
जगकर अगवानी करना ही
सदा अक्लमंदी की बात।